Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB BOOKS Notes

1. Leibnitz: "Monadology"

लाइबनिज: (चिद्-बिन्दु-सिद्धान्त)

लाइबनिज के दर्शन में 'चिद्-बिन्दु सिद्धान्त' उनके दर्शन की आधारशिला है। इनसे पहले आनेवाले दो महान दार्शनिक देकार्त और स्पिनोजा ने अपने पदार्थ-विवेचन क्रम में क्रमशः 'द्वैतवाद' और 'एकवाद' का सहारा लिया था। किन्तु इनके विपरीत लाइबनिज ने 'बहुलवाद' का समर्थन किया और अनेक वस्तुओं की आध्यात्मिक सत्ता को स्वीकारा। इस प्रकार की सत्ता को उन्होंने चिद्-बिन्दु अथवा Monads की संज्ञा दी।

लाइबनिज का मानना है कि विश्व की व्याख्या पदार्थ के आधार पर तो होना ही चाहिए तथा पदार्थ को आत्माश्रयी शाश्वत अनन्त तथा सर्वगुण सम्पन्न रहना चाहिए परन्तु इसे अनेक मानना चाहिए ताकि व्यक्तिगत विशेषों की व्याख्या हो सके। यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि पदार्थ का स्वरूप क्या होना चाहिए, जिसके आधार पर विश्व की ऐसी व्याख्या हो सके जिसमें स्पिनोजा के विचार तथा अणुवाद के दोनों उत्कर्ष (Advantages) हों पर इनके अपकर्ष (disadvantages) न हों, ऐसी दशा में देकार्त के अनुसंधान में एक पते की बात दीखती है। उन्होंने बताया था कि आत्मज्ञान सभी ज्ञानों की तुलना में श्रेष्ठ है, क्योंकि इसे हम साक्षात रूप से अनुभव करते हैं। अतः पदार्थ को आत्म + तुल्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!
GRB BOOKS

होना चाहिए। इसलिए पदार्थ को आत्मा-तुल्य आध्यात्मिक इकाई माना जाना चाहिए क्योंकि इसी प्रकार के प्रत्यक्ष से पदार्थ की सक्रियता अविभाज्यता तथा आत्मा अस्तित्व सिद्ध हो सकता है। अतः इसप्रकार की आत्मा तुल्य आध्यात्मिक इकाई को लाइब्नीज ने चेतन-परमाणु (Monad) कहा जिसकी व्याख्या इसप्रकार की जा सकती है।

लाइब्नीज के अनुसार चिद्-बिन्दुओं की संख्या असंख्य है और प्रत्येक में वे ही गुण हैं जो ब्रह्म में बताये गये हैं। ये अलिपनीय और अपने में पूर्ण हैं। प्रत्येक शाश्वत में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निहित है क्योंकि प्रत्येक इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य की सभी घटनाएँ अन्तर्भूत हैं, इसलिए यह ऐसा अणु है, जिसमें विराट विश्व है (a macrocosm in micro (cosm)) चूँकि इसमें आदि अन्त सभी हैं, इसलिए इसे हम भूत-भारी और भविष्य गामी कह सकते हैं अर्थात इसमें बीती हुई सभी दशाएँ संरक्षित हैं और भविष्य में होनेवाली सभी बातें बीज रूप में मौजूद हैं।

चूँकि प्रत्येक चिद्-बिन्दु स्वतन्त्र तथा स्वावलंबी सत्ता है इसलिए किसी चिद्-बिन्दु को दूसरे की आवश्यकता नहीं होती है, न एक दूसरे पर निर्भर होता है और न उनमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान संभव है। इस

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने बताया कि चिद्-बिन्दु गवाक्षहीन (window less) होते हैं।

परन्तु यह प्रश्न उठता है कि यदि चिद्-बिन्दु गवाक्षहीन हैं तो उनके बीच के परस्पर संबंध को हम कैसे व्यक्त कर सकते हैं, क्योंकि वास्तविक चीजों में पारस्परिक आदान-प्रदान दीखता है में होता है, जिसे मोनेडवाद को स्पष्ट करना चाहिए। लाइबनित्ज के अनुसार प्रत्येक चिद्-बिन्दु आत्माश्रयी तथा आत्मनिर्भर है और ऐसा न मानने से उसकी स्वतंत्र तथा स्वावलम्बी सत्ता में बाधा लग जाएगा, पर गवाक्षहीन रहने पर भी इनमें से प्रत्येक में दो समान लक्षण हैं, जिनके कारण हमें आभासित होता है कि इनमें साक्षात् संबंध है। प्रत्येक चिद्-बिन्दु में ईक्षण (Perception) तथा प्रयासन (Appetition) शक्तियाँ हैं और इन सामान्य लक्षणों के आधार पर विश्व की सभी वस्तुओं के आपसी ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्ध को स्पष्ट किया जा सकता है।

ईक्षण-शक्ति के कारण प्रत्येक चिद्-बिन्दु सभी अन्य चिद्-बिन्दुओं की दशाओं को प्रति बिम्बित (reflects or mirrors) करता है, और प्रयासन शक्ति के कारण प्रत्येक मोनेड का विकास अपनी दिशाओं में

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

क्रमबद्ध तरीके से होता रहता है।
तत्पश्चात लार्ड मॉर्गन
ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है
कि चूँकि आसक्त चित्-बिन्दु है, और
वे अविच्छिन्न श्रृंखला में क्रमबद्ध हैं
इसलिए निम्नतम से उच्चतम के बीच
में सोपान-क्रम (Hierarchy) है
अर्थात् क्रमशः निम्नतम के बाद
निम्न तब मध्यम वर्गी और अन्त में
उच्चवर्गी चित्-बिन्दु श्रृंखला बद्ध है।
यह श्रृंखला तारतम्य (अथवा अविच्छिन्न-
ता (Continuity) के सिद्धान्त पर आधारित
है। अब प्रत्येक चित्-बिन्दुओं में ज्ञान
तथा प्रयोजन है पर जो मोनेड
जिस सीमा तक निम्न कोटि का है उसमें
उतने अस्पष्ट रूप में ये सारे गुण
पाये जाते हैं और जिस चित्बिन्दु
में ये सारे गुण अत्यधिक स्पष्ट
रूप में पाये जाते हैं, वे उच्च कोटि
के समझे जाते है। ऐसे उच्च-कोटि
चित्-बिन्दुओं में ज्ञान तथा प्रयोजन
सकल रूप में देखे जाते है। अतः
निम्नकोटि के चित्-बिन्दु में ज्ञान
धुंधला होता है और उनका प्रयोजन
आवेशात्मक (Impulsive) होता है तथा
साथ ही लक्ष्यहीन (Blind)
मालूम होता है। परन्तु इसके विपरीत
उच्च-कोटि के चित्-बिन्दुओं में
लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान होता है।
इसलिए उनकी प्रयोजन-प्रक्रिया को
इच्छात्मक क्रिया (Voluntary
action) कहा जाता है।
परन्तु चूँकि पेड़-पौधों

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

के यन्त्रवत और मानव के सृष्टया
विवेकपूर्ण व्यवहार पर ही एक सोपान
के अन्तर्गत हैं, इसलिए इनके बीच भी
केवल मात्रिक ही अन्तर है।
लाइब्नीज के आगे
स्पष्ट करते हुए लिखा है कि चिद्-बिन्दु
ऊपर - उच्चतर के सोपान क्रम में
असंख्यात हैं और अदृश्य ईश्वर से
एक Monad के बीच दूसरे Monad
का स्थान आता है। फिर भी हम
चिद्-बिन्दुओं को तीन मुख्य वर्गों में
विभाजित कर सकते हैं- प्रथम श्रेणी
में वे चिद्-बिन्दु आ सकते हैं, जिनके
समूह को हम निर्जीव या जड़वस्तु
समझते हैं। परन्तु ये भी विकासात्मक
हैं यद्यपि हम इनमें विकास नहीं
देख पाते हैं और न हम इनकी
रक्षण-प्रक्रिया ही समझ सकते हैं।
इनकी प्रचलन प्रक्रिया हमें उद्देश्य-
पूर्ण नहीं मालूम होती है और
हम समझते हैं कि इनमें केवल
यान्त्रिक व्यापार पाया जाता है।
लाइब्नीज के विचार
में इन चिद्-बिन्दुओं में भी चेतना
है। पर यह इतनी कम है कि हम
यह कह सकते हैं कि ये निद्रित
अवस्था (stupor sleep) में हैं।
द्वितीय वर्ग में वे चिद्-बिन्दु हैं जिनमें
चेतना और स्मृति पायी जाती
है। इन्हें हम चेतन Monad
कह सकते हैं। इस
श्रेणी में पेड़-पौधे
तथा पशु गिने जा

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!

GRB BOOKS

सकते हैं। परन्तु उच्चतर वर्ग के monad को आत्म चेतन monad कहा जा सकता है। इस श्रेणी में मानव गिने जा सकते हैं। इनमें इच्छात्मक उद्देश्यपूर्ण व्यापार देखा जाता है और इनका लक्षण स्पष्ट होगा विचार तथा अनिवार्य ज्ञान के रूप में पाया जाता है। यहाँ पर लाइब्नीज का कहना है कि दर्शन के अनुसार केवल आत्म चेतन को ही आत्मा (spirit) माना गया है। यही कारण है कि देकार्त के अनुसार पशुओं तथा अन्य वस्तुओं को निर्जीव जड़ मान लिया गया है। पर ऐसा समझ लेने पर द्वैत सिद्धान्त चला जाता है जिसमें मन - शरीर जड़-चेतन इत्यादि के संबंध की समस्याओं पर पूरा प्रकाश नहीं पड़ पाया है। पर जड़ चेतन तथा आत्म - चेतन के बीच केवल आंशिक अन्तर स्वीकार कर लेने से लाइब्नीज के अनुसार जड़-चेतन, मन - शरीर अन्तर्वाद, द्वैतवाद इत्यादि के बीच समुचित सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

अपने चिद्-बिन्दुवाद की व्याख्या क्रम में लाइब्नीज ने देश-काल तथा क्रिया प्रतिक्रिया से उत्पन्न स्थितियों का भी जिक्र किया है। उनका कहना है कि देश-काल की स्वतन्त्र सत्ता है ही नहीं। चिद्-बिन्दुओं के बीच बाह्य संबंध के अर्थ ग्रहण (abstraction) या

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

अमूर्त मीमांसा के आधार पर इनकी रचना की गयी है। और यदि देखा जाए क्रिया प्रतिक्रिया असत्य है तो इनपर आधारित यन्त्रवाद भी असत्य ठहरेगा। यद्यपि यन्त्रवाद वास्तव में असत्य है, तो भी अपनी व्यवस्था के अनुसार लाइबनीज इस व्यापार को यान्त्रिक (Mechanical) कहते हैं, जिसे वस्तुओं के परिमाण, आकार तथा गति (Moton) के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। इस अर्थ में लाइबनीज का मत था कि देकार्त और न्यूटन के यन्त्रवाद का अधिक से अधिक स्थलों पर काम में लाया जाय। इनके इस मत के कई कारण थे।

लाइबनीज महोदय ने इसी संदर्भ में इन कारणों का उल्लेख किया है। प्रथमतः निम्नकोटि के चिद्-बिन्दुओं की चेतना और उनकी प्रत्यक्षन-क्रिया का उद्देश्य इतना क्षीण मालूम देता है कि उनकी क्रियाओं को यान्त्रिक समझा जा सकता है। फिर उच्च तर मानव की क्रियाएँ भी ऐसी हैं कि पूर्ववर्ती क्रियाओं का फल या परिणाम समझी जा सकती है और यान्त्रिक क्रिया में भी पूर्ववर्ती के आधार पर बाद में होनेवाली घटनाओं की व्याख्या की जाती है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

अतः उच्चतर Monad की क्रियाओं को इस अर्थ में यान्त्रिक समझा जा सकता है। अर्थात पूर्वस्थापित छन्द के अनुसार मोनेडो की कार्यवाही ऐसी व्यवस्थित की गयी है कि एक Monad के परिवर्तन से अन्य Monad के परिवर्तन में मेल रखा जाता है और इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व परिवर्तन उसके बाद के परिवर्तन का कारण है। अतः यन्त्रवाद कुछ दूर तक मान्य है।

यदि यन्त्रवाद को हम कुछ दूर तक मान्य भी स्वीकार कर लें तो इसे सत्य नहीं समझा जायेगा। यथार्थ में यन्त्रवाद उद्देश्यवाद के अन्तर्गत है; क्योंकि निम्नतम Monad में भी कुछ चेतना आवश्यक है और वह अपनी आन्तरिक उद्देश्यपूर्ति से ही प्रेरित होता है फिर सभी Monad की कार्यवाही का कोई अन्तिम उद्देश्य है जिसे ईश्वर पूर्वस्थापित छन्द के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। अतः सभी Monad की भी कार्यवाही अन्ततः उद्देश्यपूर्ण ही है। लाइबनिज के अनुसार सभी Monad के छन्द का पूर्वस्थापित उद्देश्य ईश्वर के मन में है इसलिए बर्गसाँ के मतानुसार लाइबनिज के सिद्धान्त का यह उद्देश्यवाद का अर्थ यही है कि क्रिया का कोई उद्देश्य हो, चाहे वह ज्ञात हो या अज्ञात। इस उद्देश्यों पूर्णतः

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

को सम सामयिक दार्शनिक बर्गसा सत्य नहीं समझते हैं। उनके अनुसार यदि उद्देश्य पहले से निर्धारित हैं, तो इसे आन्तरिक यन्त्रवाद कहा जायगा। वास्तविक उद्देश्यवाद वह है जिसमें नित्य - नवीन उद्देश्यों को गढ़कर उसकी पूर्ति की जाय। चूँकि लाइब्नीज के अनुसार सभी मोनेडों के चिन्द का पूर्वस्थापित उद्देश्य ईश्वर के मन में है। इसलिए बर्गसा के मतानुसार लाइब्नीज के सिद्धान्त का यह उद्देश्यवाद नहीं वरन यन्त्रवाद ही रह जायेगा।

इसी क्रम में पदार्थ के स्वरूप की भी चर्चा आवश्यक है क्योंकि इसी के आधार पर चिद्-बिन्दुओं के समायोजन द्वारा विश्व की व्याख्या की जा सकती है। लाइब्नीज ने अपने द्रव्य को चेतन परमाणु कहा है जिनमे से प्रत्येक मोनेड जड़ तथा चेतन के सभी गुणों से विभूषित है। चूँकि द्रव्य Monad दोनों गुणों का धारण करता है। इसलिए चिद् - बिन्दुवाद के आधार पर लाइब्नीज ने प्लेटो - और डेमोक्रिटस के बीच भी सराहनीय समन्वय स्थापित किया है।

सुगम पास-बुक